Rest in Peace

ठन गई।
मौत से ठन गई।

जूझने का मेरा इरादा न था,
मोड़ पर मिलेंगे इसका वादा न था,

रास्ता रोक कर वह खड़ी हो गई,
यूं लगा जिंदगी से बड़ी हो गई।

मौत की उमर क्या है? दो पल भी नहीं,
जिंदगी सिलसिला, आज कल की नहीं।

मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूं,
लौटकर आऊंगा, कूच से क्यों डरूं?

तू दबे पांव, चोरी-छिपे से न आ,
सामने वार कर फिर मुझे आजमा।

मौत से बेखबर, जिंदगी का सफ़र,
शाम हर सुरमई, रात बंसी का स्वर।

बात ऐसी नहीं कि कोई ग़म ही नहीं,
दर्द अपने-पराए कुछ कम भी नहीं।

प्यार इतना परायों से मुझको मिला,
न अपनों से बाक़ी हैं कोई गिला।

हर चुनौती से दो हाथ मैंने किए,
आंधियों में जलाए हैं बुझते दिए।

आज झकझोरता तेज़ तूफ़ान है,
नाव भंवरों की बांहों में मेहमान है।

पार पाने का क़ायम मगर हौसला,
देख तेवर तूफ़ां का, तेवरी तन गई।
मौत से ठन गई।

—श्री अटल बिहारी वाजपेयी

In this journey…

Department has witnessed what is and what has been as sojourns of our journey.

We lost our seniors who laid traditions and contributed to our repertoire of experiences… Miss S.K. Ram academician, education consultant, materials developer, course designer in English and above all mentor and friend to her associates and colleagues.

Prof. Rajendra Dixit, scholar and academician who guided in developing textual materials with his insights and intellectual richness.

We will not fail to put on record passing away of Shri Bishen Singh who served with quiet, and best of his abilities.

This joureny will go on…

जाऊंगा कहां
रहूंगा यहीं

किसी किवाड़ पर
हाथ के निशान की तरह
पड़ा रहूंगा

किसी पुराने ताखे
या सन्दूक की गंध में
छिपा रहूंगा मैं

दबा रहूंगा किसी रजिस्टर में
अपने स्थायी पते के
अक्षरों के नीचे

या बन सका
तो ऊंची ढलानों पर
नमक ढोते खच्चरों की
घंटी बन जाऊंगा

या फिर मांझी के पुल की
कोई कील

जाऊंगा कहां

देखना
रहेगा सब जस का तस
सिर्फ मेरी दिनचर्या बादल जाएगी

सांझ को जब लौटेंगे पक्षी
लौट आऊंगा मैं भी

सुबह जब उड़ेंगे
उड़ जाऊंगा उनके संग…

—केदारनाथ सिंह